* श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः *

स वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे ।
अहैतुक्यप्रतिहता ययात्मा सुप्रसीदति ॥

धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेनकथासु यः ।
नोत्पादयेद् यदि रतिं श्रम एव हि केवलम् ॥

भागवत-पत्रिका

सर्वोत्कृष्ट धर्म है वह जो आत्मा को आनन्द प्रदायक ।
भक्ति अधोक्षज की अहैतुकी विघ्नशून्य अति मंगलदायक ॥

सब धर्मों का श्रेष्ठ रीति से पालन करते जीव निरन्तर ।
किन्तु हरि-कथा-प्रीति न हो श्रम व्यर्थ सभी केवल बंधनकर ।

वर्ष १५ | गौराब्द ४८३, मास—गोविन्द २१, वार—क्षीरोदशायी, शनिवार, ३० फाल्गुन, सम्वत् २०२६, १४ मार्च १९७० | संख्या १०

मार्च १९७०

आचार्य-वन्दना

नमो ॐ श्रीविष्णुपाद श्री-भक्तिप्रज्ञान केशव !
श्रीप्रभुपाद प्रेष्ठाय गौरपार्षद रूपिणे ॥
श्रीचैतन्य - मनोभीष्ट परिपूरक मूर्त्तये ।
गौर-सारस्वताम्नाय आचार्याय नमो नमः ॥
गूढ़ानुरागिणे तुभ्यं श्रीसिद्धान्तसरस्वती ।
श्रीगौर-करुणा-शक्ति-स्वरूपाय नमो नमः ॥
श्रीरूपानुगसिद्धान्तविपक्षिमुखमर्द्दिने ।
कृष्ण - तत्त्वज्ञ - सम्राजे कृतिरत्नाय ते नमः ॥

श्रीब्रह्म-माध्व-गौड़ीय भागवत-परम्परा

श्रीकृष्ण
|
ब्रह्मा
|
नारद
|
व्यास
|
मध्व
|
नरहरि
|
माधव
|
अक्षोभ्य
|
जयतीर्थ
|
ज्ञान-सिन्धु
|
दलानिधि
|
विद्यानिधि
|
राजेन्द्र
|
जयधर्म
|
पुरुषोत्तम
|
ब्रह्मण्यतीर्थ
|
व्यास तीर्थ
|
लक्ष्मीपति
|
माधवेन्द्रपुरी

माधवेन्द्रपुरी
- ईश्वर पुरी
  - (स्वयं भगवान्) श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु
    - श्रीस्वरूप दामोदर
    - श्रीरूप गोस्वामी
      - श्रीजीव गोस्वामी
      - श्रीरघुनाथदास गोस्वामी
        - श्रीकृष्णदास कविराज
          - श्रीनरोत्तम ठाकुर
            - श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर
              - श्रीबलदेव विद्याभूषण
                - श्रीजगन्नाथदास
                - श्रीभक्तिविनोद ठाकुर
                - श्रीगौरकिशोरदास
                - श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती
                - श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी
    - श्रीसनातन गोस्वामी
- अद्वैताचार्य
- नित्यानन्द प्रभु

श्रीश्रीब्रह्म-माधव-गौड़ीय-गुरु-परम्परा

श्रीकृष्ण - ब्रह्म - देवर्षि - बादरायण - संज्ञकान् ।
श्रीमध्व - श्रीपद्मनाभ - श्रीमन्नृहरि - माधवान् ॥
अक्षोभ्य - जयतीर्थ - श्रीज्ञानसिन्धु - दयानिधीन् ।
श्रीविद्यानिधि - राजेन्द्र - जयधर्मान् क्रमाद्वयम् ॥
पुरुषोत्तम - ब्रह्मण्य व्यासतीर्थांश्च संतुस्मः ।
ततो लक्ष्मीपतिं श्रीमन्माधवेन्द्रश्च भक्तितः ॥
तच्छिष्यान् श्रीश्वराद्वैत नित्यानन्दान् जगद्गुरून् ।
देवमीश्वरशिष्यं श्रीचैतन्यश्च भजामहे ।
श्रीकृष्ण - प्रेमदानेन येन निस्तारितं जगत् ॥
महाप्रभु - स्वरूप - श्रीदामोदरः प्रियंकरः ।
रूपसनातनौ द्वौ च गोस्वामिप्रवरौ प्रभू ॥
श्रीजीवो रघुनाथश्च रूपप्रियो महामतिः ।
तत्प्रियः कविराज - श्रीकृष्णदासप्रभुर्मतः ॥
तस्य प्रियोत्तमः श्रीलः सेवापरो नरोत्तमः ।
तदनुगतभक्तः श्रीविश्वनाथः सदुत्तमः ॥
तदासक्तश्च गौड़ीयवेदान्ताचार्यभूषणम् ।
विद्याभूषणपाद श्रीबलदेवसदाश्रयः ॥
वैष्णवसार्वभौमः श्रीजगन्नाथप्रभुस्तथा ।
श्रीमायापुरधाम्नस्तु निर्द्देष्टा सज्जनप्रियः ॥

शुद्धभक्ति प्रचारस्य मूलीभूत इहोत्तमः ।
श्रीभक्तिविनोदो देवस्तत्प्रियत्वेन विश्रुतः ॥
तदभिन्नसुहृद्वर्यो महाभागवतोत्तमः ।
श्रीगौरकिशोरः साक्षाद् वैराग्यं विग्रहाश्रितम् ॥
मायावादि - कुसिद्धान्त - ध्वान्तराशि-निरासकः ।
विशुद्धभक्तिसिद्धान्तैः स्वान्तपद्मविकाशकः ॥
देवोऽसौ परमो हंसो मत्तः श्रीगौरकीर्तने ।
प्रचाराचारकार्येषु निरन्तरं महोत्सुकः ॥
हरिप्रियजनैर्गम्य ॐ विष्णुपादपूर्वकः ।
श्रीपादो भक्तिसिद्धान्तसरस्वती महोदयः ॥
तत्प्रियो भक्तिप्रज्ञान केशवो भागवत्तमः ।
मायावादान्धतमसे मग्नानुद्धारणेक्षमः ॥
श्रीरूपानुगसिद्धान्तसंस्थापकमहायशाः ।
गौर - कीर्तन सर्वस्व गौरधाम विवर्द्धनः ॥
सर्वे ते गौरवंशाश्च परमहंसविग्रहाः ।
वयञ्च प्रणता दासास्तदुच्छिष्ट ग्रहाग्रहाः ॥

श्रीव्यासपूजाके अवसरपर प्रति-निवेदन

आचार्य लोग श्रीव्यासमुखरित श्रुतिका ही कीर्त्तन किया करते हैं। हम लोग भी उन्हींका अनुसरण करते हुए श्रीश्रीलगुरुपादपद्ममें अञ्जलि प्रदान करनेके लिए प्रस्तुत हुए हैं। अपरा विद्याके संतोष-विधान करनेके लिए बालकगण गौरशुक्ला पंचमीके दिन अंजलि देते हैं। हम लोग आज माघी कृष्णा-पंचमी के दिन परा विद्यादेवीके श्रीचरणोंमें अञ्जलि प्रदान कर रहे हैं। यह अञ्जलि श्रीव्यासदेवजीके श्रीकरकमलों द्वारा उद्भासित हुई है। "यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।" —इस श्रुति मन्त्रके श्रवण करनेकी योग्यता प्राप्त करनेके लिए ही इस श्रीव्यास-पूजा यज्ञका आवाहन है।

एकदिन श्रीमद् आनन्दतीर्थ मध्वाचार्यजीने श्रीव्यासपूजामें नियुक्त होकर श्रीव्यासासनपर उपविष्ट होकर आचार्यका कार्य किया था। उनके अनुगत सम्प्रदायके व्यक्ति उनके आनुगत्यका परिचय देते हुए नित्यकाल आम्नाय पारम्पर्यमें श्रीव्यासासनपर उपविष्ट होकर श्रीमद्भागवत-तात्पर्यकी व्याख्या करते हैं। प्रापंचिक विचारद्वारा विचार करनेपर अपनी अयोग्यताका अनुभव होता है; इसके द्वारा व्यासासनपर उपवेशन कार्यमें बाधा पहुँचती है। किन्तु श्रीगुरुदेवकी आज्ञाका उल्लंघनरूपी दुष्प्रवृत्तिद्वारा हम किसी प्रकारसे श्रीश्रीलगुरुपादपद्मकी सेवासे विमुख न हो जाय—यही श्रीव्यासदेवजी और श्रीमन्मध्वाचार्यजीके श्रीचरणोंमें हमारी प्रार्थना है। श्रीमध्वमुनिने श्रीव्यासदेवजीका पूजाभिनय प्रदर्शन करते हुए अस्सी वर्षतक गुरुलीलाभिनय किया था। एक समय उन्होंने भीमरूपसे उदित होकर कृष्ण-विद्वेषी व्यक्तियोंको गदाके प्रहारके द्वारा विनाश करते हुए कृष्णसेवाका आदर्श दिखलाया था। उन्होंने दूसरे समय हनुमानजीके रूपमें श्रीरामचन्द्रजीके प्रतिद्वन्द्वियोंका विनाश किया था। वे नित्यकाल वायुरूपसे वैकुण्ठको धारण करते हुए अप्राकृत चिन्मय राज्यकी नित्य अवस्थितिमें सहायता करते हैं। श्रीमद् आनन्दतीर्थ मध्वाचार्यजीकी शुक्ला नवमीके दिन अप्रकट-पूजा की जाती है। उन्हींके अधस्तन मदीय गुरुवर्गने श्रीव्यासपूजाके पुरोहितरूपसे मुझे वरण किया है। यह उन लोगोंकी महाभागवत अनुसरण लीलामात्र है। मैं अपने स्वरूपगत परिचयसे श्रीरूपानुगजनोंका अयोग्य असभाष्य नित्यदास हूँ। इसलिए इस अयोग्यताके कारण ही मेरी यह तात्कालिक विशृङ्खलता उपस्थित हुई है। श्रोतागण यदि मेरी इस धृष्टताको क्षमा कर सकें, तो मैं उनके दास्य-पदमें नियुक्त होनेका अधिकार

प्राप्त कर सकूँगा। मेरा कण्ठरोध करनेसे मुझे श्रीव्यासपूजा करनेका अधिकार मिल न सकेगा। आप लोगोंके निकट मेरी यही सकातर प्रार्थना है कि आप लोगोंने असंख्य महापुरुषोंको श्रीव्यासपूजा करनेका अधिकार प्रदान किया है; अतएव मुझे भी क्षणकालके लिए यह पूजा करनेका अधिकार प्रदान करें।

श्रीव्यासपूजाके पुरोहित होनेके कारण मैं कठिन साधन अवलम्बन कर श्रीव्यासासन पर अधिरोहण करना नहीं चाहता। मैं अपने श्रीगुरुदेव और उनके पूर्व महाजनोंके प्रीतिविधानके लिए जो आराधना कर रहा हूँ, वह अवतारवाद या अवरोहवाद विचारपर प्रतिष्ठित है। मैं बाह्य जड़-जगतके ज्ञान-प्रयासका अवलम्बन करते हुए अजित वस्तु भगवानको पानेकी आशा कर प्रतारित होना नहीं चाहता। इसलिए श्रीब्रह्माजीके अधस्तन सम्प्रदायके महापुरुषोंके आदेश, श्रीव्यासानुगत व्यक्तियोंकी आज्ञा और श्रीरूपानुग वैष्णवोंकी अपार करुणाके प्रति अत्यन्त श्रद्धायुक्त होकर ही आज मैं श्रीरूप गोस्वामीपाद प्रदर्शित भक्तिपथका थोड़ा बहुत वर्णन करते हुए श्रीव्यासदेवजीके श्रीचरणोंमें अञ्जलि प्रदान कर रहा हूँ। केवल श्रीव्यासदेवजीके श्रीचरणों में ही अञ्जलि नहीं दे रहा हूँ, बल्कि श्रीव्यासानुगत गौड़ीय गुरु वैष्णवोंके श्रीचरणोंमें भी अञ्जलि देनेके लिए श्रीगुरुदेवकी आज्ञानुसार अधिरोहवादियोंको नीच प्रवृत्तिको भी परित्याग करनेकी धृष्टता प्रदर्शन कर रहा हूँ। मेरे इस कार्य द्वारा "तृणादपि सुनीच" शिक्षाकी अवहेलना नहीं हो रही है। श्रीरूपानुग वैष्णवोंकी महिमा कहने जाकर मेरी "तरोरपि सहिष्णुता" में किसी प्रकारकी बाधा नहीं पहुँच रही है। किसी जड़ प्रतिष्ठामें प्रतिष्ठित होनेकी दुराशाके वशीभूत होकर मैं श्रीगुरुवाक्यका लंघन नहीं कर रहा हूँ। इसलिए मैं श्रीगुरुगौराङ्ग कथित मानदधर्ममें दीक्षित होनेकी अभिलाषासे सीमाबद्धताका परित्यागपूर्वक वैकुण्ठ कथाकी ही पुनरावृत्ति कर रहा हूँ। इस अनुष्ठानके गुण-दोषका मैं फल भोग करनेवाला नहीं हूँ। इसलिए फल या दक्षिणके रूपमें मैं जागतिक निन्दा-प्रशंसाका प्रार्थी नहीं हूँ। नित्यपार्षद श्रीरूप गोस्वामीपाद और उनके अनुगतजन और भविष्यत् कालके श्रीरूपानुग वैष्णवगण—सभी ही मेरे पूज्य श्रीगुरुदेव श्रीब्रह्मा-नारद-व्यास-मध्व-नित्यानन्दाश्रित आश्रय जातीय भगवद् विग्रह हैं। नित्यकाल उनके आश्रित होनेपर ही मैं भुक्ति-मुक्तिरूपी दोनों पिशाचियोंको 'जननी' के रूपमें न जानकर 'पूतना' के रूपमें जानूँगा। मेरी यही प्रार्थना है कि ज्ञान वैराग्यादि भक्ति जननीके उपयुक्त पुत्र होकर मातृसेवाके प्रति उदासीनता प्रकाश न करें—जननीको 'दासी' न समझ बैठें।

'पराविद्या' शब्द द्वारा भक्तिका ही संकेत किया गया है। उसी भक्तिलाभकी इच्छासे मैं

श्रीव्यासादि गुरुजनोंके चरणोंमें उपस्थित हुआ हूँ। वे मेरे अभक्तिपूर्ण मरु-हृदयमें कृपावारि-का सिंचन कर मुझे उनके नित्यदासके रूपमें जानकर सेवामें अधिकार प्रदान करें। श्रीश्री-चैतन्य महाप्रभुजीने स्वयं अपने श्रीमुखसे महाभागवतका लक्षण बतलाया है—

"जाँहारे देखिले मुखे आइसे कृष्णनाम।
ताँहाके जानि ओ तुमि वैष्णव-प्रधान॥"

आप लोग सभी महाभागवत होनेके कारण मुझे आप लोगोंने श्रीव्यासार्चन करने-का अधिकार प्रदान किया है। यह अधिकार प्रदान करनेके विनिमयमें मैं आप लोग जैसे महाभागवतोंकी सेवामें अनन्तकाल तक नियुक्त रहूँगा। इसके लिए मैं किसी प्रकारके वेतनका प्रार्थी नहीं हूँ।

अन्तमें मेरा यही निवेदन है कि आप लोगोंके महत्वका परिचय देनेवाले जो सभी वाक्य मेरे द्वारा कहे गये हैं, प्रापञ्चिक विचार-से उनमें मेरी कोई योग्यता नहीं है। इन सभी वाक्योंकोश्रीगुरुदास संबंधसे मेरे पूर्वगुरुजनोंका प्राप्य होनेके कारण इन्हें ग्रहण करते हुए उन लोगोंके श्रीचरणकमलोंमें ही समर्पण कर रहा हूँ। जागतिक ज्ञानके आधारपर इस वाणी-समूहको ग्रहण करनेका सामर्थ्य मुझमें नहीं है! श्रीश्रीचैतन्य महाप्रभुके आदेशसे "तृणा-दपि सुनीच" मन्त्रमें दीक्षित मैं ऐसे गुरुभार वहन करनेमें अनिपुण हूँ। अतएव इन्हें श्रीगुरुदेवके उद्देश्यसे समर्पण करनेके व्यतीत मेरे लिये और कोई मार्ग नहीं है।

भवता महत्त्वं समर्पितं न हि वस्तुं प्रभवामि वैभवम्।
उचितं गुरवेऽहं अद्य तं सुवराकः प्रणयात् समर्पये॥

— जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद श्रील सरस्वती ठाकुर

—:※:—

भक्तों की महिमा

जा दिन संत पाहुने आवत।
तीरथ कोटि सनान करै फल, जैसौ दरशन पावत।
नयौ नेह दिन-दिन प्रति उनकैं, चरन, कमल चित लावत।
मन-बच-कम और नहिं जानत, सुमिरत औ सुमिरावत॥
मिथ्या-वाद उपाधि रहित ह्वै, विमल-बिमल जस-गावत।
बंधन कर्म कठिन जे पहिले, सोऊ काटि बहावत॥
संगति रहैं साधु की अनुदिन, भव दुःख दूरि नसावत।
सूरदास संगति करि तिन की, जे हरि-सुरति-करावत॥

(सूरदासजीकी पदावलीसे)

श्रीगुरुभक्ति

सुविस्तृत मायाजालमें आबद्ध, मायाके मोहमें अन्धे हुए जीव सुखकी आशामें इतस्ततः भ्रमण करते हैं; विद्या, बुद्धि, धन, मान—सबमें सुख अन्वेषण करते हैं; परन्तु कहीं भी सुख नहीं पाते। इस प्रकार सुखकी खोजमें जीवोंके अनेकों जन्म बीत जाते हैं। अनेक जन्मोंमें अर्जित सुकृति-पुञ्जके फल-स्वरूप जब जीवके हृदयमें भगवत् सम्बन्धी श्रद्धाका सञ्चार होता है, तभी यह सूचित होता है कि अब उसे वास्तविक सुखकी प्राप्ति हो सकती है। श्रीकृष्ण स्वयं-भगवान् हैं, जीव उनके किङ्कर हैं। श्रीकृष्णकी भक्ति करनेसे जीवके सारे क्लेशोंके अन्त होनेपर कृष्ण-दास्यकी प्राप्ति होती है। इस प्रकार सुदृढ़ विश्वासका नाम ही 'श्रद्धा' है। श्रद्धावान जीव अल्प समयमें ही सद्गुरुका चरणाश्रय करता है; श्रीगुरु-कृपाके बलसे ही उसको सर्वसिद्धि प्राप्त हो जाती है।

वैष्णव अपार करुणामय होते हैं। वे जगतके परम बन्धु होते हैं। जीवोंको कृष्ण-विमुख जानकर वे जगत्में निरन्तर भक्ति तत्त्वका प्रचार करते हैं। पुनः जब जीव-समूह भक्ति-तत्त्वके प्रति श्रद्धावान् होकर वैष्णव-चरणाश्रय करते हैं, उस समय वैष्णवगण श्रीगुरुके रूपमें उनको भगवन्भजनका उपदेश करते हैं। भजनविज्ञ अनन्यचेता उपयुक्त शिष्यके ऊपर कृपा कर—उनको श्रीकृष्णके अप्राकृत भण्डारको दर्शनकी शक्ति प्रदान करते हैं। इस प्रकार वैष्णव-कृपाकी सीमा नहीं है। अगणित अनर्थोंसे भरपूर, नाना प्रकारसे मायाके आपात् सुखकर विषय-भोगों-में फँसे हुए, संसार-सागरमें निमज्जित, अति क्षुद्र अधम जीवोंको जो श्रीगुरुके रूपमें अपने चरणोंमें स्थान देते हैं, जो उनके भजन-विहीन जीवनका भार स्वयं अपने कंधोंपर ले लेते हैं एवं जो अपने विशुद्ध चरित्र और सुदृढ़ आदर्शों द्वारा उनको मुग्ध कर उसके द्वारा शक्ति सञ्चार कर उनको भजन मार्गपर क्रमशः अग्रसर कराते हैं, उन वैष्णवोंकी अपार कृपा-की वास्तवमें कोई सीमा नहीं है, वह अनन्त और अद्भुत है। इसीलिये श्रीनरोत्तम ठाकुर ने लिखा है—

श्रीगुरु करुणासिन्धु, अधम-जनार बन्धु,
'लोकनाथ' लोकेर जीवन।
हा हा प्रभु कर दया, देह मोरे पदछाया,
एबे जश घुषुक त्रिभुवन।
चक्षुदान दिला जेइ, जन्मे जन्मे प्रभु सेइ,
दिव्यज्ञान हृदे प्रकाशित।
प्रेम भक्ति जाँहा हैते, अविद्या विनाश जाते,
वेदे गाय जाँहार चरित॥

गुरु दो प्रकारके होते हैं—दीक्षा-गुरु और शिक्षा-गुरु। जिनसे मंत्र लिया जाता है, वे दीक्षागुरु हैं; जिनसे भजन सम्बन्धी शिक्षा पायी जाती है, वे शिक्षागुरु हैं। इन दोनोंको ही शिष्य एक समान सम्मान प्रदान करेंगे; दोनोंको ही कृष्ण शक्तिका प्रकाश समझेंगे। उनमें किसी प्रकारका भेद-भाव रखनेसे शिष्य अपराधी हो पड़ेंगे। श्रीचैतन्यचरितामृतमें कहा गया है—

यद्यपि आमार गुरु चैतन्येर दास।
तथापि जानिये आमि ताँहार प्रकाश॥
गुरु कृष्णरूप हन शास्त्रेर प्रमाणे।
गुरु रूपे कृष्ण कृपा करेन भक्तगणे॥
शिक्षागुरुके त जानि कृष्णेर स्वरूप।
अन्तर्यामी, भक्तश्रेष्ठ—एइ दुइ रूप॥

गुरुदेवको साक्षात् भगवान् मानना भयंकर अपराध है, क्योंकि इससे जीव और ईश्वरको समान समझनारूप मायावाद मत हो जाता है अर्थात् इसके द्वारा जीव ही ईश्वर है—ऐसी भावना हृदयमें उत्पन्न हो जाती है, जो भक्तिके सर्वथा विरुद्ध और कपोल-कल्पित मत है। हाँ, श्रीगुरुदेवको श्रीभगवान्का प्रकाश-विशेष या भगवानकी शक्ति मानकर उनकी भक्ति करनेमें कोई दोष नहीं है। प्रेममय भगवान् ही श्रीगुरुदेवमें प्रकटित होकर दीक्षा दे रहे हैं—शिष्यके मनमें ऐसी भावना रहनेसे उसका कल्याण होगा; श्रीगुरुदेवके वचनोंमें दृढ़ विश्वास होगा और उनके प्रति अचला भक्ति होगी।

श्रद्धालु जीव अनेक यत्नपूर्वक सद्गुरुका चरणाश्रय करेंगे। वैष्णवाचार्य श्रीसनातन गोस्वामीने विभिन्न शास्त्रोंसे लेकर श्रीगुरु तथा शिष्यके लक्षण 'हरिभक्तिविलास' ग्रन्थमें संग्रह किये हैं। उन सब शास्त्रोंका तात्पर्य है—दृढ़ चरित्र, विशुद्ध भक्त भागवतोत्तम ही जीवोंके गुरु हैं; और निष्पाप शुद्ध श्रद्धालु विनीत शिष्य ही शिक्षाके लिये उपयुक्त है। इसके विपरीत होनेसे ही अनर्थ उपस्थित होता है। इस विषयमें श्रीमन्महाप्रभुने स्वयं कहा है—"जेइ कृष्णतत्त्ववेत्ता सेइ गुरु हय" तथा "गुरु यथा भक्तिशून्य तथा शिष्यगण।" महाप्रभुके श्रीमुखकी वाणी सदा-सर्वदा सत्य हुआ करती है—इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

शास्त्रमें ऐसा कहा गया है कि गुरु बहुत दिनों तक शिष्यकी परीक्षा करेंगे और शिष्य भी श्रीगुरुके चरित्रको भलीभाँति परखेगा। इस प्रकार दोनों-दोनोंकी शुद्धिता जान लेने पर सम्बन्ध स्थापन करेंगे। गुरु और शिष्यका सम्बन्ध दो-चार दिनोंके लिये नहीं होता, यह सम्बन्ध जीवनके बाद भी वर्त्तमान रहता है। शिष्यको सावधानीके साथ अन्वेषण कर भलीभाँति देखभाल करनेके पश्चात् ही सद्गुरुका आश्रय लेना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो वह नाना कारणोंसे गुरुदेवके

प्रति अचला भक्ति नहीं रख सकता एवं गुरुके प्रति अवज्ञा करनेके कारण परमार्थसे गिर जाता है । यदि गुरु अयोग्य हैं, तो शिष्य उनको त्यागकर दूसरे सद्गुरुकी शरण लेंगे। शिष्य भी यदि पतित हो जाय और श्रीगुरुदेव उसका संशोधन करनेमें असमर्थ हों तो ऐसे शिष्यको वे परित्याग करेंगे।

श्रीगुरुदेव शिष्यको जो भी आज्ञा दें, शिष्यको दृढ़ श्रद्धाके साथ उसका पालन करना चाहिए। ऐसा न कर बहुतोंके पास नाना प्रकारके उपदेशोंके श्रवणसे लौल्य (चाञ्चल्य) दोषके कारण उसका भजन नहीं हो सकेगा। परन्तु देखना होगा कि श्रीगुरुदेव जो आज्ञा देते हैं, वह शास्त्र-संगत है या नहीं। यदि वह आज्ञा शास्त्र-विरुद्ध लगे, तो सरलतापूर्वक अपने संशयको श्रीगुरुचरणोंमें निवेदन कर शास्त्रवाक्योंके साथ समन्वय कर लेंगे अर्थात् श्रीगुरुदेवद्वारा अपनी आज्ञाकी वैधता शास्त्रीय प्रमाणोंके आधारपर प्रमाणित करनेके बाद संशय-रहित होकर उसका पालन करेंगे। गुरुदेव जैसी आज्ञा दें, उसका विशेष यत्न और दृढ़ताके साथ पालन न करनेसे किसी प्रकार भी गुरुकी कृपा नहीं पायी जा सकती है।

भागवतोत्तम गुरुदेव इच्छा करनेसे ही शिष्यके अन्दर शक्ति संचार कर उसे परम भागवत बना सकते हैं । परन्तु अयोग्य शिष्यके प्रति वैसा करनेके लिये श्रीगुरुदेवकी स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं होती । जीव यत्न-पूर्वक श्रीगुरुके वचनोंका पालन कर अल्पकाल में ही गुरुकृपारूपी धनका अधिकारी हो सकते हैं। श्रीगुरु-कृपा क्या चीज है, उनको इसका बोध हो जाता है । जब तक भजनमें अनर्थ रहे, तब तक यत्नके साथ शास्त्र विधि-निषेधोंका पालन करते हुए श्रीगुरुके बतलाये हुए भजन-पथ पर अग्रसर होते रहना चाहिए। श्रीगुरुदेवकी कृपासे जिस समय शिष्य अनर्थ-सागरको पार होकर निष्ठा और तत्पश्चात् रुचिके राज्यमें उपस्थित होते हैं, उसी समय श्रीगुरु कृपा प्रबलरूपसे प्रवाहित होने लगती है। उस समय श्रीगुरुदेव वैसे शिष्यके जीवन-धन हुआ करते हैं। उनके प्रति शिष्यकी ममता उत्पन्न होती है और क्रमशः भजन-सुख वृद्धि होनेके साथ-साथ यह ममता परिपक्व होनेपर श्रीगुरुदेवके चरणोंमें अत्यन्त यत्नके साथ अपना आत्म-समर्पण कर देता है।

जब तक स्वाभाविकी प्रीतिका उदय नहीं होता, तबतक श्रीगुरुकृपा प्राप्त करनेके लिये उनकी सेवा करना शिष्यके लिये नितान्त आवश्यक है । यत्नपूर्वक श्रीगुरुके वचनोंका पालन करना ही उनकी प्रधान सेवा है । अनेक शिष्य ऐसे देखे जाते हैं, जो श्रीगुरुदेवके वचनोंका पालन या आचरण करनेमें उतना उत्साह या यत्न नहीं प्रकाश करते, परन्तु

किसी प्रकारसे श्रीगुरुदेवके पद-सेवन या पंखा-झलने आदिके लिये बड़े व्यतिव्यस्त दीखते हैं। यदि यह कार्य साहजिक प्रीतिके साथ हो, तो अत्युत्तम बात है; परन्तु यदि अन्दरमें कपटता रहें या ऐसी सेवासे गुरुदेवका प्रिय हो जाऊँगा ऐसी आशा रहे, तो यह उतनी अच्छी बात नहीं। इससे गुरुदेवका प्रिय नहीं हुआ जाता। उनकी (गुरुदेवकी) आज्ञाका पालन करनेसे वे बड़े संतुष्ट होते हैं। उपरोक्त सेवन कार्य बुरे नहीं हैं; उनसे श्रीगुरुवाक्यको पालन करनेकी शक्ति मिलती है और उसीसे श्रीगुरु-प्रसादकी प्राप्ति होती है। साहजिक प्रीति-जनित सेवाके फलस्वरूप आत्म-प्रसाद लाभ होता है।

—जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिविनोद ठाकुर

★

यथार्थ गुरु कौन हैं ?

गुरुर्न स स्यात् स्वजनो न स स्यात्
पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात् ।
दैवं न तत् स्यान्न पतिश्च स स्यात्
न मोचयेत् यः समुपेत-मृत्युम् ॥

(श्रीमद्भागवत ५ । ५ । १८)

भक्तिपथके उपदेशके द्वारा शिष्यको जो समुपस्थित मृत्युरूप संसार-चक्रसे उद्धार नहीं कर सकते, वे गुरु 'गुरु' नहीं हैं, वह स्वजन 'स्वजन' नहीं है, वे पिता 'पिता' नहीं हैं अर्थात् वे पुत्रोत्पत्ति करनेके योग्य नहीं हैं, वे माता 'माता' नहीं हैं अर्थात् वे गर्भधारणके योग्य नहीं हैं, वे देवता 'देवता' नहीं हैं, अर्थात् उनका मनुष्यों के निकट पूजा ग्रहण करना उचित नहीं है, वे पति 'पति' नहीं हैं, अर्थात् उनका पाणिग्रहण करना उचित नहीं है।

तात्पर्य यही है कि जो व्यक्ति हमें भगवान्‌की भक्तिके मार्गमें प्रवेश कराकर हमारी जन्म-मृत्यु चक्ररूपी संसारसे रक्षा कर सके, वे ही हमारे यथार्थ गुरु हैं। वे ही यथार्थ माता-पिता, भाई-बन्धु, स्वजन, देवता या पति होने योग्य हैं।

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः

परमाराध्यतम ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी प्रभुपादकी शुभ-आविर्भाव तिथि-पूजाके अवसरपर दीन हीन अयोग्य सेवककी

"क्षुद्र-पुष्पाञ्जलि"

नामश्रेष्ठ मनुमपि शचीपुत्रमत्र स्वरूपं
श्रीरूपं तस्याग्रजमुरुपुरीं माथुरीं गोष्ठवाटीम्।
राधाकुण्डं गिरिवरमहो राधिका माधवाशां
प्राप्तो यस्य प्रथितकृपया श्रीगुरुं तं नतोऽस्मि॥

स्वयंभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अद्वयज्ञान असमोर्द्ध्व तत्व हैं। उनकी लीला सर्व अवतारोंसे श्रेष्ठ एवं माधुर्यपूर्ण है। भगवान् श्रीकृष्ण गौणरूपमें भूभारहरण एवं मुख्य रूपमें अपने प्रेमी भक्तोंको प्रेम-पीयूषका आस्वादन करानेके लिये द्वापर युगमें अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने गोकुल-वृन्दावन, मथुरा एवं द्वारिकामें विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ कीं। इन सभी लीलाओंमें व्रजमण्डलके अन्तर्गत ऐश्वर्य-आच्छादित जो माधुर्यपूर्ण लीलाएँ हैं, वे सर्वश्रेष्ठ लीलाएँ हैं। इन लीलाओंमें वे अपने भक्तोंके प्रेमके वशीभूत होकर उनके चिर ऋणी बन जाते हैं। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णमें अन्यान्य भगवत् अवतारोंकी अपेक्षा चार असाधारण गुण हैं, जो व्रजेन्द्र-नन्दन श्रीकृष्णके अतिरिक्त श्रीराम आदि किसी भी अवतारोंमें प्रकाशित नहीं हैं। ये चार असाधारण गुण हैं—रूप-माधुर्य, गुण-माधुर्य, लीलामाधुर्य और वेणुमाधुर्य। ठीक इसी प्रकार भगवानके पार्षदोंमें भी तारतम्य है अर्थात् अन्य भगवत् अवतारोंके पार्षदोंकी अपेक्षा कृष्णके प्रियतम पार्षदवर्ग प्रेमकी दृष्टिसे सर्वश्रेष्ठ हैं।

जिस प्रकार भगवान् युग-युगमें अधर्मका नाश और धर्मकी रक्षाके लिये अवतीर्ण होते हैं, उसी प्रकार भगवद्पार्षद् भी जो भगवद्-शक्ति विशेष हैं, अपने आराध्यदेवकी प्रेरणासे युग-युगमें समयानुसार अधर्मके नाश एवं सद्धर्मकी स्थापनाके लिये अवतरित होते हैं। इन भगवद्पार्षदों या भगवत् शक्तियोंको इस जगतमें अवतीर्ण होनेपर आचार्य या गुरु कहा जाता है। आचार्य भगवानके स्वरूप हैं। श्रीमद्भागवत आदि शास्त्रोंमें श्रीगुरुदेवको मनुष्य मानना अथवा उनकी निन्दा करना भीषण अपराध माना गया है तथा उसके फलस्वरूप नरककी प्राप्ति होना भी बतलाया

गया है। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि गुरुदेव साक्षात् विषय-विग्रह, भोक्ता, स्वयं भगवान् हैं; बल्कि गुरुदेव भगवानके प्रकाश विग्रह हैं। अर्थात् वे भगवान्के सर्वाधिक प्रियतम सेवक भगवान् हैं। कृष्ण विषय-भगवान हैं और श्रीगुरुदेव आश्रय-भगवान हैं।

स्वयं भगवान् श्रीकृष्णके अभिन्न विग्रह श्रीबलदेव प्रभुके प्रकाश ही गुरुतत्त्व हैं। श्रीबलदेवजी भगवत्तत्व होनेपर भी अपनेको कृष्णका सेवक मानते हैं तथा दशरूपोंमें कृष्णकी सेवा करते हैं। वे बलदेव प्रभु ही इस जगत्में स्वयं भगवान् कृष्णकी मनोभीष्ट-पूर्तिके लिये—जीवोंके कल्याणके लिये गोलोकधामसे भूलोकमें अवतीर्ण होते हैं। मदीय गुरुपादपद्म इन्हीं श्रीबलदेव प्रभुके प्रकाश-विग्रह एवं श्रीकृष्णके परम प्रियतम सेवक हैं। यही नहीं, श्रीकृष्णप्रिया वृषभानु-नन्दिनी श्रीमती राधिकाकी प्रिय सेविका हैं; इस परमपुण्यमयी माघी कृष्णा तृतीया-तिथि में उनका आविर्भाव हुआ था।

इन महापुरुषने गौर कृष्णकी मनोभि-लाषा पूरण करनेके लिये—विशुद्ध कृष्ण प्रेमका प्रचार करनेके लिये जगत्में अवतार लिया—मुझ जैसे बद्ध, कृष्ण-विमुख जीवोंका उद्धार करनेके लिये ही आविर्भाव हुआ था। इन्होंने जीवोंके कल्याणके लिये वेद-वेदान्त, उपनिषद्, रामायण, महाभारत एवं वेदानुग शास्त्रोंका सार मंथन कर इस कलिकालमें कृष्णनाम और कृष्ण भक्तिका सारा जीवन प्रचार किया है। श्रीब्रह्मा, नारद, वेदव्यास, शुकदेव, मध्वाचार्य, श्रीमाधवेन्द्रपुरी, श्रीईश्वर-पुरी, श्रीचैतन्य महाप्रभु, श्रील स्वरूपदामोदर, श्रील सनातन-रूपजीव-रघुनाथ गोस्वामी, श्रील कृष्णदास कविराज, श्रीनिवास-नरोत्तम स्यामानन्द प्रभु-त्रय, श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती-ठाकुर, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु, श्रील भक्तिविनोद ठाकुर, श्रील गौर किशोरदास बाबाजी एवं श्रील सरस्वती ठाकुरके अनादि कालसे प्रवाहित शुद्धाभक्तिकी गुरुपरम्परा धाराके ये एक उज्ज्वलतम नक्षत्र हैं।

आजसे ७२ वर्ष पूर्व पूर्वबंगके बारिसाल जिलेके बनारीपाडा नामक ग्राममें एक समृद्ध (जमींदार) परिवारमें ये आविर्भूत हुए थे। स्कूल-कॉलेजमें उच्चशिक्षा प्राप्त करनेके पश्चात् भारत एवं भारतके बाहर समग्र विश्वमें गौड़ीयमठोंकी स्थापनाके द्वारा शुद्धाभक्तिक-प्रचार करनेवाले अतिमर्त्य महापुरुष जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद १०८ श्री श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरका श्रीचरणाश्रय ग्रहण किया। मन्त्र एवं दीक्षाके पश्चात् श्रीविनोदबिहारी ब्रह्मचारी नामसे परिचित हुए। संन्यास ग्रहणके पश्चात् यही महापुरुष श्री श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महा-राजके रूपमें प्रसिद्ध हुए। ये एकनिष्ठ गुरु-सेवक थे। अपने गुरुदेवकी तिरोभाव लीलाके पश्चात् इन्होंने संन्यास ग्रहण कर भारत एवं भारतके बाहर त्रिदण्डि संन्यासियोंको भेजकर विभिन्न भाषाओंमें मासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित

कर, विभिन्न भाषाओंमें शुद्धभक्ति ग्रन्थोंका प्रकाशन कर सर्वत्र ही भक्तिप्रचार केन्द्र स्थापित कर गौरकृष्णकी मनोभीष्ट सेवाकी प्रतिष्ठा की है। सन् १९४० के वैशाख महीनेकी अक्षय तृतीया-तिथिमें श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिकी स्थापना की। सन् १९४१ के भाद्र-पदमें संन्यास ग्रहण किया। इसके पश्चात् हजारों लोगोंके साथ प्रतिवर्ष कार्त्तिकके महीनेमें क्रमशः पुरीमण्डल (जगन्नाथपुरी-मण्डल), व्रजमण्डल, गौड़मण्डल, द्वारिका, केदारबद्री आदि उत्तराखण्ड, अयोध्याधाम, देवघर-वैद्यनाथधाम, सेतुबन्ध-रामेश्वर, धनुष-कोटि, श्रीरंगम आदि उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम एवं मध्यभारतके चारों धामों, सप्त-पुरियों एवं अगणित तीर्थोंमें परिक्रमाका आयोजन कर समस्त भारतमें भक्तिकी पुनीत-धारा प्रबल रूपसे प्रवाहित की। इसके अतिरिक्त जीवन भर शहरोंमें, ग्रामोंमें धर्म सभाओंका आयोजन कर मायावाद आदि कुमतोंका खण्डन कर शुद्धा भक्तिकी स्थापना की है। लाखों कृष्णविमुख जीवोंको कृष्ण-भक्तिके मार्गपर अग्रसर कराया है। इन्होंने स्वयं मौलिक ग्रन्थोंकी रचना की है। पूर्वाचार्यों के ग्रन्थोंका पुनः प्रकाशन किया है। वैष्णव-विजय या मायावादकी जीवनी इनका एक मौलिक एवं सुसिद्धान्तपूर्ण अद्भुत सुन्दर ग्रन्थ है। प्रकाशन कार्यके लिये इन्होंने बृहद्-मृदंग—मुद्रणयंत्रकी स्थापना की है।

शास्त्रोंके अनुसार पूर्वजन्मकी राशिराशि सुकृति एकत्रित होनेपर भगवत् विषयक पारमार्थिक श्रद्धा उत्पन्न होती है। इस पारमार्थिक श्रद्धाके होनेपर ही सद्गुरुकी प्राप्ति होती है। शुद्ध सत्गुरु भगवान्की कृपासे पाये जाते हैं। इन सद्गुरुकी कृपासे ही दीक्षामन्त्र प्राप्त होता है, भजनकी पद्धति प्राप्त होती है तथा क्रमशः अनर्थ दूर होनेपर हृदयक्षेत्रमें क्रमशः निष्ठा, रुचि, आसक्ति एवं भाव, तत्पश्चात् प्रेम प्रकाशित होता है। बिना गुरु कृपाके कृष्णभक्ति होना असम्भव है।

गुरुतत्व नित्य हैं, सेवक तत्व भी नित्य है। सद्गुरु अपने शिष्योंका कदापि परित्याग नहीं करते; वे जन्मजन्मान्तरोंमें भी शिष्यका कल्याण करते हैं क्योंकि गुरु शिष्यका सम्बन्ध दोचार दिनोंका अनित्य सम्बन्ध नहीं, बल्कि नित्य सम्बन्ध है।

हे करुणावरुणालय परमाराध्यतम श्रील गुरुदेव! मैं सब प्रकारसे दीनहीन एवं सर्वथा अयोग्य हूँ। योग्यताकी दृष्टिसे मैं आपकी कृपा-प्राप्तिका अधिकारी नहीं, किन्तु जैसा भी हूँ, आपका ही हूँ और आपका ही रहूँगा। मैंने आपके चरणोंमें बहुतेरे अपराध किये हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है आप अहैतुकी कृपा करके मेरे समस्त अपराधोंको क्षमा करेंगे। आखिर आपके सिवाय इस जगतमें मेरा है ही कौन? शास्त्रोंकी ऐसी घोषणा है कि गुरुके अप्रसन्न होनेपर भगवान भी क्षमा नहीं करते; किन्तु भगवानके अप्रसन्न होनेपर गुरु सब कुछ ठीक कर लेते हैं। अतः मैं असहाय होकर आपके

चरणोंके समीप आया हूँ; आप अनुग्रह कर अपनी सेवा ग्रहण करनेके योग्य मुझे बनायें। मैं आज आपकी पुण्य आविर्भाव-तिथिके अवसरपर आपके प्रिय सेवक पूज्यपाद श्रीवामन महाराज और पूज्यपाद श्रीनारायण महाराज आदि गुरु सेवकोंके आनुगत्यमें अपने हृदयकी भावपुष्पाञ्जलि अर्पित कर रहा हूँ। इसे ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करें।

श्रीचरणकण कृपालेशप्रार्थी
आपका अधम सेवक
"मुरलीमोहन"

हरिभक्तिकी सर्वश्रेष्ठता

भक्तिदृढ़ा भवेद्यस्य देवदेवे जनार्दने ।
श्रेयांसि तस्य सिद्ध्यन्ति भक्तिमन्तोऽधिकास्ततः ॥
तौ पादौ सफलौ पुंसां कृष्णायतनगामिकौ ।
तौ करौ भाग्यनिलयौ हरिपूजापरायणौ ॥
ते च नेत्रे महाभागे पश्यते ये जनार्दनम् ।
सा जिह्वा प्रोच्यते सद्भिर्हरिनामपरायणा ॥
तन्मनः संयुतं विष्णौ सा वाणी तत्परायणा ।
ते श्रोत्रे तत्कथासारपूरिते लोकवन्दिते ॥

(वृहन्नारदीय पुराणसे)

श्रीवृहन्नारदीय-पुराणमें कहा गया है—जो व्यक्ति देवदेव जनार्दन (भगवान् कृष्ण) के प्रति निश्चला भक्तियुक्त है, वह सभी प्रकारके श्रेयः अनायास ही प्राप्त कर लेता है । अतएव हरिभक्त ही सर्वश्रेष्ठ और सर्वपूज्य है । जो व्यक्ति अपने चरणोंद्वारा भगवान् कृष्णके मन्दिरके लिए गमन करता है, उसीके ही चरण सार्थक हैं। जो दोनों हाथ भगवान्‌की पूजा या सेवामें लगे हुए हैं, वे ही भाग्यशाली हैं। जिन आँखोंद्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी श्रीमूर्त्तिका दर्शन किया जाय, वे ही सार्थक हैं और जिस जिह्वाद्वारा नित्य निरन्तर हरिनाम कीर्त्तन किया जाय, वह जिह्वा ही यथार्थ जिह्वा है । जिसका चित्त सर्वदा हरिके ध्यानमें निमग्न है, वही चित्त यथार्थ चित्त है । जो वाक्य हरिविषयक हैं, वे ही यथार्थ वाक्य हैं और जो कान हरिकथा श्रवणरूप सार वस्तुद्वारा परिपूर्ण हैं, वे ही सभीके प्रशंसनीय हैं।

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः

परमाराध्यतम श्रीश्रीलगुरुदेव ॐ विष्णुपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य १०८ श्रीश्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके श्रीपादपद्मोंमें दासाधमकी क्षुद्र-पुष्पाञ्जलि

परमाराध्यतम श्रील गुरुदेव ! आज आपकी आविर्भाव-तिथि है। आपके प्रियजन गुरुसेवकवृन्द श्रद्धारूपी हृदयके थालमें नाना प्रकारकी सेवा-भावनारूपी उपहार एवं कोमल पुष्प सजाकर आपके श्रीचरणोंमें अर्पण कर रहे हैं। किन्तु यह दुर्भागा शून्य-हृदय लेकर आपके श्रीचरणोंके समीप पहुँचनेमें असमर्थ है। जैसा भी हूँ, आप मुझे अपना दास ही समझें। आपके अनुगत जन यदि इस अधमपर थोड़ी भी कृपादृष्टि कर दें, तो यह दास आपके मनोऽभिष्ट रूपी सेवा करनेमें समर्थ हो सकेगा।

परमाराध्यतम श्रील गुरुदेव ! आप श्रीचैतन्य महाप्रभुजीके मनोऽभिष्ट पूर्ण करनेके लिए इस जगतमें आविर्भूत होकर हम जैसे पतितोंको शरण दिया। आपने श्रीचैतन्य महाप्रभुजीकी वाणी प्रचार कर अगणित असत् सम्प्रदायोंके अप सिद्धान्तोंको चूर्ण-विचूर्ण कर दिया है। विशेषकर मायावाद, जो वर्त्तमान समयमें विकराल रूप धारण कर हम जैसे दुर्बल जीवोंको ग्रास करनेके लिए प्रस्तुत है, आपकी सिंह-गर्जनासे थर-थर काँपता हुआ, दूर भागा हुआ है।

हे श्रीगौरकरुणाविग्रह श्रील गुरुदेव ! आपने सर्व प्रकारसे अपने गुरुदेवके मनोऽभिष्टको पूरण किया है। आप भगवत्-शक्ति स्वरूप हैं। आपके समान दयालु इस जगतमें दूसरा कोई भी नहीं है। कैसा भी पापी-अपराधी क्यों न हो, आपके शरणागत होनेपर उसे भी आप उत्तम अधिकार दे देते हैं। किन्तु दुर्भाग्यवशतः यह अधम आपकी अद्भुत कृपाको न समझ सका; अतः आपकी सेवाका अधिकारी न बन पाया। आपकी कृपा होनेपर पंगु व्यक्ति गिरि-लंघन कर सकता है, मूक व्यक्ति वाचाल बन सकता है, असमर्थ व्यक्ति सर्व-समर्थ बन सकता है; मैं यह आशा करता हूँ कि आप इस अयोग्यपर अपने प्रियजनों द्वारा कृपा करेंगे। आपके प्रियसेवकोंके द्वारा आपकी महिमा और आपकी दयालुताका आज आपके शुभ आविर्भावके दिन यत्किञ्चित् उपलब्धि कर पा रहा हूँ। यह अधम यदि आपके शरण लिया नहीं होता, और इस पतितको यदि अपने चरणकमलोंमें स्थान दिए नहीं होते, तो इस पतितकी क्या गति होती—कहा नहीं जा सकता। वामन होकर चाँद पकड़ने की तरह मैं अधम होकर कृष्ण-प्रेम प्राप्तिकी आशासे आपके शरण आया हूँ। आप मुझपर कृपा कर मुझे श्रीमन्महाप्रभुके नाम-कीर्त्तन करनेका अधिकार दें। आपकी कृपाके बिना ऐसा होना असंभव है। आपकी कृपाके बिना सम्बन्ध-ज्ञानका होना असंभव है। इसी आशा-थालको लेकर आपके रातुल चरणोंमें कृपा-भिक्षाके लिए उपस्थित हूँ। आज मुझपर अहैतुकी कृपा करें।

आपका ही दासाधम कुञ्जबिहारी

परमाराध्यतम श्रीश्रील गुरुदेवकी पावन-आविर्भाव-तिथिमें तदीय श्रीचरणकमलोंमें सकातरपूर्ण

भा

उत्सुक अन्तर में मैंने
भावों के पुष्प उगाये।
क्यों आज मेरा मन इतना
कुछ कहनेको उकसाये ॥१॥

व

इस पुण्य तिथिकी बेलामें
श्री गुरु 'केशव' आविर्भूत हुए।
इस विस्तृत विश्वभूमि पर
जन जनको भक्ति-भाव दिए ॥२॥

पु

कुछ वर्ष बीते मुझको भी
श्रीचरणोंमें आश्रय मिला।
पाकर उनकी दया अमित
कुछ सेवाका अधिकार मिला ॥३॥

ष्पां

माघी बदी तीज हर वर्ष हमें
उनका स्मरण दिलाती है।
तब पूर्ण हृदयमें जन-जनके
भक्ति प्रकाश जगाती है ॥४॥

ज

उनकी पावन गाथा को
मैं किंकर कैसे कथन करूँ।
कृपा करें वे मुझपर इतनी
उनके पदद्वय हृदय धरूँ ॥५॥

लि

हो विषयों से विरत हृदय
श्रीहरि चरणोंमें ध्यान रहे।
दास रहूँ गुरु-वैष्णव जनका
किन्तु हृदय निरभिमान रहे ॥६॥

पाऊँ मैं कृष्ण-प्रेम प्यारा
राधाके चरणोंमें अभिरति।
भव-बन्धनसे मैं मुक्त रहूँ
तव श्रीचरणों में सुन्दर मति ॥७॥

आशा और वितृष्णा त्यागूँ
हरिनाम रमण हो हिय मेरे।
हो भक्ति उदय मेरे अन्दर
भव व्याधि नहीं मुझको घेरे ॥८॥

जग की सुन्दर काया न मिले
मन मोहक माया ना मिले।
ना मुझे कभी दुःसङ्ग मिले
सुन्दर सच्चा सत्सङ्ग मिले ॥९॥

ना मिले मुझे संसार प्रिय
ना मिले यहाँ का वैभवकुल
बस मिले मुझे तो गुरुसेवा
रहनेको मिले मुझे गुरुकुल ॥१०॥

बजते हो जहाँ मृदङ्ग खोल
साधुजन कहते हरि हरि बोल।
होती हो आरति जहाँ नित्य
होते हो जहाँ प्रवचन अमोल ॥११॥

मैं भाग्यहीन पाषाण बुद्धि
अवसर पाकर भी चूक गया।
माया से मोहित हो मैंने
जीवनका बन्धन मोल लिया ॥१२॥

अभी नहीं कुछ बिगड़ा मनवा
शेष सभी श्वासें अर्पित कर।
भव-बन्धन कट जायेगा पलमें
तन-मन-धन सब अर्पित कर ॥१३॥

स्वीकार करो कुछ पुष्प देव
लाये हैं हम किंकर कृपण।
भावोंके तुच्छ कुसुम कोमल
तव चरणोंमें करने अर्पण ॥१४॥

हम चरणरेणु कृपा-प्रार्थी

श्री सत्यपाल गोयल एम० ए०

एवं

श्रीमती नीरजा गोयल एम० ए०

परमाराध्यतम १०८ श्रीश्रील गुरुदेवकी परम
शुभाविर्भाव तिथिपर तदीय श्रीपादपद्मोंमें
दीन-हीन दासाधमकी

भक्तिपूर्ण पुष्पाञ्जलि

परमाराध्यतम श्रीश्रील गुरुदेव ! आज आपकी परम पुनीत शुभाविर्भाव-तिथि (माघी कृष्णा तृतीया-तिथि) उपस्थित हुई है। इसी तिथिको धन्यातिधन्य कर हम जैसे पतित, मायाबद्ध जीवोंका उद्धार करनेके लिए आप कृपा कर इस वसुन्धरामें प्रकट हुए थे । यह मेरे लिए परम सौभाग्यका दिन है कि इस अवसरपर मैं आपको अपार और अगाध महिमा एवं गुणावलीका कणिकामात्र भी कीर्त्तन करनेका प्रयास कर अपनी तुच्छाति तुच्छ एवं क्षुद्र रसनाको कृत कृतार्थ कर सकूँ।

अब आप मेरी इस क्षुद्र तथा नश्वर पार्थिव-दृष्टिके अन्तरालमें छिप गए हैं । आप अपनी भौम-लीलाका संवरण कर नित्यलीलामें प्रवेश कर गए हैं। शायद इस क्षुद्र दासाधमकी सेवाविमुखता और कपटता देखकर ही आपने ऐसा करना उचित समझा । मैं आपकी सेवा करना तो दूर रहा, केवल अपनी इन्द्रियोंके सुखको चरितार्थ करनेमें ही व्यतिव्यस्त रहा। आपके श्रीचरणकमलोंका दुर्लभ आश्रय पाकर मैंने मनुष्य जीवनका सुनहरा अवसर पाया था। सो अपनी खोटी बुद्धिके कारण मैंने अवहेलापूर्वक लुटा दिया । कहाँ आप मुझे कृष्णप्रेमसुधा पान कराना चाहते थे और कहाँ मैं विषय हलाहलका अहोरात्र सेवन कर अपनेको अजर-अमर मानता रहा ! कहाँ आप मुझ जैसे क्षुद्र कीटको विषय-विष्ठा रूपी नरकसे उद्धार कर कृष्ण-भक्ति रूप अमृत-सागरमें डुबोना चाहते थे और कहाँ मैं विषय-विष्ठाको ही अमृत-निधि समझकर उसीको खुरेदता रहा ! कहाँ आप मुझ जैसे अयोग्य, दुष्ट, कुबुद्धिको परम योग्य, सुशील और सुबुद्धि बनाना चाहते थे और कहाँ मैं अपनी पामरता, दुष्टता और दुर्बुद्धिको परित्याग करनेसे हिचकता रहा ! कहाँ आप मुझे इस अगाध, असीम भवसागरसे अनायास ही पार उतारनेके इच्छुक थे और कहाँ मैं अनर्थोंकी महामोहमयी जालमें स्वयं फँसकर भवसागरमें डुबा जा रहा !

हे पतितपावन गुरुदेव ! न मुझमें कुछ शक्ति है, न मुझमें बुद्धि या विवेक ही है। मैं महामूर्ख और सर्वथा सब दुर्गुणोंसे परिपूर्ण हूँ । मुझमें केवल अभिमान, दम्भ और पाखण्डता ही भरपूर हैं । हे देव ! न मुझमें

ऐसी योग्यता या गुण है जिसके बलपर आपकी कृपा आकर्षण कर सकूँ। आप पतितों पर दया करते हैं। अतएव मुझे केवल भरोसा है आपकी अहैतुकी कृपाका।

इस माया-मरीचिकामें आशा रूपी मृग-तृष्णाके वशीभूत हो भटक रहे मुझ जैसे पामर, नीचका उद्धारक आप जैसे और कोई दूसरा सामर्थ्यवान् नहीं है। हे गुरुदेव! जब मैं आपकी अतुलनीय कृपा और असीम स्नेहका स्मरण करता हूँ, तो मेरे हृदयमें तीव्र-वेदना उठती है और मेरा हृदय भर आता है, जो आप मुझ जैसे अपराधी, विमुख जीवका आकर्षण करनेके लिए वर्षण करते थे। मुझ पात्रमें अगणित छेद थे, जो उस कृपा-अमृत और स्नेह-वारिको बहा देता था। क्या मेरे वे छेद इस जीवनमें भर सकेंगे? क्या मैं आपकी कृपा ग्रहणका पूर्ण अधिकारी बन सकूँगा? क्या मैं अपनेको आपके क्षुद्राति क्षुद्र दास कहनेका सौभाग्य प्राप्त कर सकूँगा? क्या मैं इस मायाके निबिड़ अन्धकारसे दूर हटकर शुद्ध प्रेमसूर्यकी अपूर्व ज्योतिको निहार सकूँगा? क्या अनर्थोंसे परिपूर्ण इस भव-सागरसे उत्तीर्ण होकर कृष्णभक्तिके परम शान्तिमय राज्यमें प्रवेश करनेका अधिकार प्राप्त कर सकूँगा? क्या मुझे आपके अभय पादपद्मोंकी सुधा निरन्तर पान करनेका सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा? क्या मुझे कृष्ण-भजन-राज्यमें प्रवेश करनेका अधिकार इस जीवनमें प्राप्त हो सकेगा? क्या इस विषय-पित्त और भुक्ति-मुक्ति पिपासा ग्रस्त हृदयमें लेशमात्र भी भक्तिरसका सिंचन होगा? क्या इस शुष्क हृदय मरु-भूमिकामें विशुद्ध लोभ-वारिका सिंचन हो व्रजभावका उदय हो सकेगा?

हे गुरुदेव! मैं वामन होकर चन्द्र पकड़ने की अयथा चेष्टा कर रहा हूँ। किन्तु आप सर्व-सामर्थ्यवान् हैं; अतएव असंभवको भी आप संभव कर सकते हैं। इसी आशासे प्रेरित होकर यह दासाधम यह महान् लोभ कर रहा है। आप मेरी धृष्टताको क्षमा करें। मुझ अपराधी, अधमका उद्धार कर अपने असीम यशको त्रिभुवनमें घोषित करें। आपने अगणित जीवोंका उद्धार कर उन्हें प्रेम राज्य में प्रवेश कराया है; क्या अकेला यह पामर ही आपकी कृपासे वंचित रहेगा?

आपका नाम 'श्रीभक्तिप्रज्ञान केशव' है। सो आप कृपा कर अपनी भक्तिरूपी विशुद्ध ज्योतिको फैलाकर मेरे अज्ञान अन्धकारका नाश करें। आपकी गंभीर, ओजस्वी वाणी मायामोह रूपी हाथीको दूर भगानेके लिए सिंह-गर्जन तुल्य है। आपका नाम ग्रहण करते ही अज्ञान अन्धकार तुरन्त ही विलीन हो जाता है, आपकी अलौकिक वाणीका लेशमात्र भी स्मरण कर हृदयमें अपूर्व शक्ति और बलका संचार होता है, आपके उस मधुमय, अपूर्व स्नेहयुक्त, लावण्यमय श्रीमुखका ध्यान कर हृदय अपूर्व शान्ति और आनन्दसे भर

जाता है । क्या पुनः उस अपूर्व श्रीमुखका दर्शन इस जीवनमें प्राप्त होगा ?

आज इस परम पुनीत तिथिमें इस क्षुद्राति क्षुद्र दासाधमकी आपके श्रीचरणकमलोंमें यही सकातर प्रार्थना है कि मेरे हृदयमें आपकी मधुमयी, अमृतपूर्ण, सर्वभयहारी वाणीका स्मरण होता रहे, आपके उस अलौकिक कोटिचन्द्र सुशीतल अभय श्रीपादपद्मोंका सर्वदा मनमें ध्यान होता रहे । आपके श्रीचरणकमलोंका दास्य ही मेरा अभीप्सित हो और आपके श्रीचरणयुगलमें मेरी अचला भक्ति सदैव बना रहे । आपकी मनोऽभिष्ट सेवा करनेमें ही मेरे जीवनकी शेष घड़ियाँ व्यतीत हो । जब-जब यह परम पावनमयी तिथि आवें, तब-तब आपकी अगाध महिमा और अशेष गुणावलीका यत्किंचित् लेशमात्र भी गान कर अपनी क्षुद्र वाणीको कृत-कृतार्थ कर सकूँ—यही मेरी आपके श्रीचरणकमलों में बारम्बार सकातर प्रार्थना है ।

आपका श्रीचरणकमलरेणुप्रार्थी
दीन-हीन पामर सेवकाधम
कृष्णस्वामीदास

प्रेमी भक्तकी दैन्यमयी प्रार्थना

मयि प्रसादं मधुरैः कटाक्षैर्वंशीनिनादानुचरैर्विधेहि ।
त्वयि प्रसन्ने किमिहापरैर्नः त्वय्यप्रसन्ने किमिहापरैर्नः ॥
निबद्धमूर्द्धाञ्जलिरेष याचे निरस्यदैन्योन्नति मुक्तकण्ठम् ।
दयानिधे देव भवत्कटाक्षदाक्षिण्यलेशेन सकृन्निषिञ्च ॥

(श्रीबिल्वमंगलजीके श्रीकृष्णकर्णामृतसे)

प्रेमी भक्ताग्रगण्य श्रीबिल्वमंगलजी श्रीकृष्णसे प्रार्थना करते हैं—हे नाथ ! हे श्रीकृष्ण ! वंशी निनादके अनुचरस्वरूप तुम्हारे कटाक्ष द्वारा मेरे प्रति कृपा विस्तार करो । क्योंकि तुम्हारे प्रसन्न होनेसे दूसरा कोई अप्रसन्न होनेपर भी कोई हानि नहीं है एवं तुम्हारे अप्रसन्न होनेपर दूसरा कोई प्रसन्न होनेसे ही क्या होगा ? मस्तकमें अञ्जलिबद्ध कर मैं अत्यन्त दीनताके साथ लज्जा परित्यागपूर्वक मुक्तकण्ठसे काकु वाक्य द्वारा तुम्हारे निकट यही प्रार्थना करता हूँ—हे देव ! हे दयानिधे ! तुम्हारे प्रेमकटाक्ष सिञ्चनरूपी दाक्षिण्य (औदार्य) रूपी कृपाकी कणिकामात्र द्वारा भी मुझे अभिषिक्त करो ।

प्रचार-प्रसङ्ग

श्रीअद्वैत-सप्तमी और श्रीनित्यानन्द त्रयोदशीका अनुष्ठान

गत २१ माधव, २९ माघ, १२ फरवरीको श्रीमहाविष्णुके अवतार श्रीश्रील अद्वैताचार्य प्रभुकी और २८ माधव, ७ फाल्गुन, १९ फरवरीको श्रीबलदेवाभिन्न श्रीश्रीनित्यानन्द प्रभुकी आविर्भाव-तिथि-पूजा समितिके मूल मठ और सभी शाखा मठोंमें उपवास, पाठ-कीर्तन-प्रवचन आदिके माध्यमसे सम्पन्न हुई है। उक्त दोनों दिवस ही श्रीश्रील अद्वैताचार्य प्रभु और श्रीश्रीलनित्यानन्द प्रभुके सम्बन्धमें विविध महाजन पदावलियोंका कीर्त्तन करनेके पश्चात् दोनोंके तत्त्व और चरित्रपर विशद रूपसे प्रकाश डाला गया।

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठमें उक्त दोनों दिवस ही संध्यारतिके पश्चात् धर्म-सभाका आयोजन किया गया। इसमें त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त परमाद्वैती महाराज, श्रीकुञ्जबिहारी ब्रह्मचारी, श्रीकृष्णस्वामीदास ब्रह्मचारी, श्रीनिकुञ्जबिहारी ब्रह्मचारी, श्रीसुबलसख ब्रह्मचारी आदि वक्ताओंने श्रीअद्वैताचार्य प्रभु और श्रीनित्यानन्द प्रभुके तत्त्व, चरित्र और शिक्षाओंपर विशद रूपसे प्रकाश डाला। अन्तमें सभापति पूज्यपाद त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण महाराजने बड़ा ही सुन्दर भाषण दिया। कीर्त्तनके पश्चात् सभा भङ्ग हुई।

श्रीश्रीव्यासपूजा-महामहोत्सव

विगत ५ गोविन्द, १४ फाल्गुन, २६ फरवरी, बृहस्पतिवारके दिन श्रीव्यासाभिन्न जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपादकी आविर्भाव-तिथि पूजाके उपलक्ष्यमें श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके मूल मठ और सभी शाखा मठोंमें १२ फाल्गुन, २४ फरवरी, मंगलवार, कृष्णा तृतीयासे लेकर १४ फाल्गुन, २६ फरवरी, बृहस्पतिवार, कृष्णा पंचमी तक तीनों दिनोंतक श्रीश्रीव्यासपूजा का अनुष्ठान बड़े समारोहके साथ सम्पन्न हुआ है।

प्रथम दिन कृष्णा तृतीया मंगलवारको श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुरके अन्तरङ्ग प्रिय पार्षदप्रवर, श्रीगौड़ीय वेदान्त

समितिके प्रतिष्ठाता, अस्मदीय श्रीश्रीलगुरु-पादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव महाराजकी शुभाविर्भाव-तिथिके अवसरपर सर्वत्र ही श्रीहरिसंकीर्त्तनके माध्यमसे श्रीश्रीव्यासपूजा और तदङ्गीभूतपूजा पञ्चक अर्थात् श्रीकृष्ण-पंचक, मध्वादि-पंचक, आचार्य-पंचक, सनकादि-पञ्चक, श्रीगुरु-पञ्चक और तत्त्व-पञ्चककी पूजा और होमके पश्चात् श्रीश्रीलगुरुपादपद्मके श्रीअशोक-अभय और श्रीकृष्णप्रेमद श्रीचरणकमलोंमें उपस्थित श्रीगुरुसेवकोंने श्रद्धाञ्जलि अर्पण किया। शामको विशेष सभामें श्रीव्यासपूजाका महत्व, श्रीश्रीव्यासदेवका दान-वैशिष्ट्य आदि विषयों पर आलोचना तथा विभिन्न गुरुसेवकों द्वारा लिखित पुष्पाञ्जलिका पाठ आदि कार्यक्रम हुए। दूसरे दिन सबेरे-शाम श्रीहरिसंकीर्त्तन, श्रीचैतन्य-भागवत पाठ और श्रीगुरु-तत्त्वपर विशद आलोचना की गई। तीसरे दिन जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीलप्रभुपादजीकी आविर्भाव-तिथि श्रीकृष्णा-पंचमीके दिन उनके श्रीचरणोंमें श्रद्धाञ्जलि अर्पण करनेके पश्चात् विशेष धर्म-सभाओंमें श्रील प्रभुपादजीके अतिमर्त्य जीवन चरित्र और उनकी अप्राकृत शिक्षाओंके सम्बन्धमें विभिन्न वक्ताओंने भाषण दिए।

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरामें पूज्यपाद त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण महाराजकी अध्यक्षतामें उक्त उत्सवादि मनाये गये। प्रथम दिन श्रीश्रीगुरुपादपद्मके आविर्भाव तिथिमें सबेरे मंगलारतिके पश्चात् श्रीगुर्वष्टक, श्रीगुरु-परम्परा, वैष्णव-वन्दना, पञ्च-तत्त्व और महामंत्रादिके कीर्त्तनके पश्चात् परमाराध्यतम श्रीश्रील गुरु महाराजकी अतिमर्त्य-जीवनी और अप्राकृत शिक्षाओंके सम्बन्धमें पूज्यपाद त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण महाराजने बड़े ही सुन्दर रूपसे प्रकाश डाला। मध्याह्नमें कीर्त्तनादिके पश्चात् सभी लोगोंने श्रीगुरुचरणोंमें पुष्पाञ्जलि-अर्पण किया। भोगराग आदिके पश्चात् निमंत्रित सभी सज्जनोंको महाप्रसाद वितरण किया गया। शामको आयोजित विशेष धर्म-सभामें संक्षेपमें श्रीगुरु तत्त्वके बारेमें आलोचनाके पश्चात् श्रीकुञ्जबिहारी ब्रह्मचारी, श्रीकृष्णस्वामीदास ब्रह्मचारी, श्रीनिकुञ्ज-बिहारी ब्रह्मचारी, श्रीसुबलसख ब्रह्मचारी आदिने अपनी पुष्पाञ्जलियाँ पाठ कीं। श्रीमुरलीमोहन ब्रह्मचारीद्वारा प्रेरित पुष्पाञ्जलि भी पाठ की गई। सभाके अन्तमें महाजन-पदावली और महामंत्रका कीर्त्तन हुआ।

दूसरे दिन सबेरे और शामको श्रीव्यास-तत्त्व और श्रीगुरु तत्त्वपर विशद प्रकाश डाला गया। शामको आयोजित विशेष सभामें त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त परमाद्वैती महाराज और श्रीनृत्यकृष्ण ब्रह्मचारीने श्रीगुरुतत्त्वपर भाषण दिया। अन्तमें सभापति पूज्यपाद त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् नारायण महाराजने जगद्गुरु श्रील भक्ति-

विनोद ठाकुर लिखित 'श्रीगुरुभक्ति' प्रबन्ध पाठ किया और श्रीगुरु-तत्त्वके बारेमें शास्त्र-सम्मत और सुसिद्धान्तपूर्ण प्रवचन दिया।

तीसरे दिन सबेरे मंगलारतिके पश्चात् श्रीगुर्वष्टक, श्रीगुरु-परम्परा, श्रीप्रभुपादपद्म-स्तवक, श्रीवैष्णव-वन्दना, श्रीपञ्चतत्त्व, श्रीरूप-मञ्जरी-पद, महामंत्र आदि कीर्त्तनके पश्चात् त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण महाराजने जगद्गुरु श्रील प्रभुपाद-जीकी उपदेशावली और जीवनीपर बड़े ही मार्मिक रूपसे प्रकाश डाला। तत्पश्चात पूज्यपाद त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त मुनि महाराजके आनुगत्यमें श्रील प्रभुपादजीके चरणोंमें पुष्पाञ्जलि अर्पण किया गया। दोपहरमें निमंत्रित सभी सज्जनोंको महाप्रसाद वितरण किया गया। शामको आयोजित विशेष धर्म-सभामें श्रीकुञ्जबिहारी ब्रह्म-चारी, श्रीकृष्णस्वामीदास ब्रह्मचारी, श्रीनि-कुञ्जबिहारी ब्रह्मचारी, श्रीनृत्यकृष्ण ब्रह्मचारी, त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त परमाद्वैती महाराज आदि वक्ताओंने श्रील प्रभुपादजीके अतिमर्त्य-चरित्र, उपदेशावली, अप्राकृत शिक्षाओंपर भावपूर्ण प्रवचन दिए। अन्तमें त्रिदंडिस्वामी श्रीश्रीमद् भक्तिवेदान्त नारा-यण महाराजने बड़ी ही ओजस्वी भाषामें श्रीलप्रभुपादजीके सम्बन्धमें भावनापूर्ण और मार्मिक प्रवचन दिया। महाजन-पदावली और महामन्त्र कीर्त्तनके पश्चात् सभा-भङ्ग हुई।

श्रीसमितिके मूल मठ श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, नवद्वीपमें श्रीवेदान्त समितिके वर्तमान आचार्य पूज्यपाद त्रिदंडिस्वामी श्रीमद् भक्ति-वेदान्त वामन महाराजकी अध्यक्षतामें यह अनुष्ठान विराट समारोहपूर्वक मनाया गया। स्वयं श्रील आचार्य महाराज, विभिन्न त्रिदण्डि संन्यासीगण, विशिष्ट ब्रह्मचारीवृन्द, गृहस्थ भक्तगण आदि विभिन्न वक्ताओंने श्रीगुरुतत्व, श्रीव्यासपूजाका माहात्म्य, श्रीव्यासदेवका वर्तमान-जगतको देन आदि विभिन्न विषयोंपर तीनों दिन बड़े ही मार्मिक रूपसे प्रकाश डाला।

श्रीउद्धारण गौड़ीय, मठ, चुँचुडा, श्री-गोलोकगंज गौड़ीय मठ, गोलोकगंज, श्रीपि-छलदा गौड़ीय मठ, पिछलदा आदि श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके अन्यान्य सभी शाखा मठोंमें यह पूजा-अनुष्ठान बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया है।

— जनैक संवाददाता

श्रीभागवत-पत्रिकाके सम्बन्धमें विवरण

(१) **प्रकाशनका स्थान**—श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा।

(२) **प्रकाशनकी अवधि**—मासिक।

(३) **मुद्रक का नाम**—श्री हर्षगुप्त।

राष्ट्रगत सम्बन्ध—हिन्दू (भारतीय)।

पता—राष्ट्रीय प्रेस, डैम्पियर नगर, मथुरा।

(४) **प्रकाशकका नाम**—श्रीकुञ्जबिहारी ब्रह्मचारी।

राष्ट्रगत सम्बन्ध—हिन्दू (गौड़ीय वैष्णव)।

पता-श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा।

(५) **सम्पादकका नाम**—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्ति वेदान्त नारायण महाराज।

राष्ट्रगत-सम्बन्ध—हिन्दू (गौड़ीय वैष्णव)

पता—श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ।

(६) **पत्रिकाका स्वत्वाधिकारी**—श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके तरफसे उसके प्रतिष्ठाता और नियामक परमहंस स्वामी श्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव महाराज।

समिति रजिस्टर्ड।

मैं, कुञ्जबिहारी ब्रह्मचारी, इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर लिखी बातें मेरी जानकारीमें और विश्वासके अनुसार सत्य हैं।

—कुञ्जबिहारी ब्रह्मचारी

१५ मार्च १९७०

प्रेमी भक्तकी लालसा

कदा शौरे गौरे वपुषि परमप्रेमरसदे।
सदेकप्राणे निष्कपटकृतभावोऽपि भविता।
कदा वा तस्यालौकिकसदनुमानेन मम हृद-
कस्मात् श्रीराधापदनखमणिज्योतिरुद्गात्॥

(श्रील प्रबोधानन्द सरस्वतीपाद कृत श्रीचैतन्यचन्द्रामृतसे)

त्रिदण्डिकुल चूड़ामणि श्रीचैतन्य भक्ताग्रगण्य श्रील प्रबोधानन्द सरस्वतीपाद कहते हैं—हे शूरसेन वंशके कुलभूषण स्वरूप श्रीकृष्ण! उन्नत-उज्ज्वल-प्रेमरसप्रदाता, रसिक भक्तोंके एकमात्र प्राणस्वरूप तुम्हारे गौरकलेवर (श्रीगौराङ्ग) रूपके प्रति कब मेरी निष्कपट प्रीति होगी? और कब उस निष्कपट-प्रीतिकी यथार्थ, अप्राकृत अनुभूति प्राप्त कर श्रीमती राधिकाजीकी पदनखमणिकी ज्योति अकस्मात् मेरे हृदयमें उदित होगी?